भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए 11वां साप्ताहिक परामर्श, 20 से 26 अगस्त, 2024 तक

हरियाणा		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त					अगस्त				
		16	17	18	19	20	22	23	24	25	26
	हिसार	1.7	8.6	0	28	21	2	1	1	1	2
	जींद	15.5	3.5	2.5	1.5	0	2	1	1	2	2
	सिरसा	0	26	0	0	3	1	1	1	1	2
	रोहतक	21	0	0	0	44.2	2	1	1	1	2
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी	64.5 to 115.5 मिमी			115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा	भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल में फूल आने से लेकर गूलर बनने की अवधि में 70 से 119 दिन की है। भारी वर्षा की स्थिति में, अत्यधिक पानी निकाल दें क्योंकि कपास रुके हुए पानी के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। बारिश के बाद कुछ खेतों में खरपतवार देखे गए। फसल की वृद्धि के अनुसार खुरपा/फावड़े से निराई-गुड़ाई करें अथवा यांत्रिक गुड़ाई करें। वर्षा के बाद खेतों से अतिरिक्त पानी हटा दिया गया और जड़ सड़न नियंत्रण के लिए संक्रमित पौधों का उपचार किया गया। सफेद मक्खी की आबादी बढ़ रही है और कुछ स्थानों पर आर्थिक सीमा से ऊपर है, जैसिड की आबादी भी ईटीएल को पार कर रही है जबकि थ्रिप्स की आबादी ईटीएल से नीचे है। पिछले सप्ताह, गुलाबी बॉलवर्म की पतंगो की संख्या में कमी आई है, लेकिन गुलाबी बॉलवर्म का संक्रमण कई खेतों में फूलों और गूलरों पर दिखाई देने लगा है। जड़ सड़न और मुरझाने के कुछ मामले देखे गए। कई स्थानों पर कपास पत्ती मुड़न वायरस रोग भी देखा गया।

सिरसा में, फसल फूलने और गूलर बनने की अवस्था में 87 से 112 दिन की है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान बादल, बरसात और गर्म आर्द्र मौसम बना रहा। ट्रैक्टर/बैल द्वारा अंतरसांस्कृतिक संचालन, हाथ से निराई-गुड़ाई, और चूसने वाले कीटों और पीबीडब्ल्यू के लिए यूरिया की पहली विभाजित खुराक और कीटनाशक छिड़काव का उपयोग किया गया। कुछ स्थानों पर कीटनाशकों और कवकनाशी छिड़काव का टैंक मिश्रण देखा गया। सभी स्थानों पर घास-फूस उग आए हैं। सफ़ेद मक्खी की घटना 10-35/3 पत्तियों के बीच, थ्रिप्स ईटीएल से नीचे और जैसिड 01-16/3 पत्तियों के बीच थी। गुलाबी बॉलवर्म की घटना हरे गूलरों की क्षति के आधार पर ईटीएल (10-50%) से ऊपर देखी गयी। कुछ स्थानों पर कपास पत्ती मुड़न वायरस रोग भी देखा गया।

सलाह:

हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बारिश के बाद अतिरिक्त पानी निकाल दें और प्रति एकड़ 1 बैग की दर से यूरिया की तीसरी खुराक डालें। सिंचाई या वर्षा के बाद हाथ से या यांत्रिक निराई-गुड़ाई करें। 100 दिन से अधिक पुरानी कपास की फसल में, विशेष रूप से हल्की मिट्टी में 2.0% यूरिया + 0.5% ZnSO4 (21%) का पर्णीय छिड़काव करें। कपास की फसल में जहां फूल आना शुरू हो गया है, गुलाबी सूँडी लार्वा के संक्रमण की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 150-200 फूलों की जांच करें । गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। कपास की फसल में शुरुआती मौसम के रोसेट फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। गुलाबी सूँडी के संक्रमण को प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5% एससी @ 200 मिली/एकड़ या क्लोरपाइरीफॉस 20% ईसी @ 500 मिली/एकड़ की पत्तियों पर छिड़काव करके प्रबंधित करें। सफेद मक्खी और जैसिड जैसे रस चूसने वाले कीटों के प्रबंधन के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। प्रारंभिक रोगसूचक पौधों और आस-पास के स्वस्थ पौधों के लिए प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम 50WP @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी से भिगोकर खेत में जड़ सड़न से प्रभावित क्षेत्र का उपचार करें। बाढ़ सिंचाई से पहले जड़ सड़न प्रभावित क्षेत्रों को मेड़ बनाकर सीमित कर दें ताकि इस बीमारी को आगे फैलने से रोका जा सके। शुरुआती मौसम में कपास पत्ती मुड़न वायरस रोग से संक्रमित पौधों को उखाड़कर गाड़ दें। पैराविल्ट के मामले में, प्रभावित पौधों पर लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। साप्ताहिक अंतराल पर और वर्षा के बाद नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अंतर-कृषि संचालन जारी रखें। सिंचाई या बारिश के बाद नाइट्रोजन उर्वरक की दूसरी विभाजित खुराक डालें। स्कायर, फूल और गूलरों को बेहतर बनाए रखने के लिए, एनपीके 13:00:45 @ 2 किग्रा/100 लीटर पानी का प्रयोग करे। यदि फसल में स्कायर, फूल और गूलर अच्छी संख्या में बन रहे हैं और पत्तियां लाल हो रही हैं, तो प्रति एकड़ 100 लीटर पानी में 1.0 किलोग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें और एक पखवाड़े के बाद इसे दोहराएं। कीट प्रकोप की नियमित निगरानी करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल और सफेद मक्खी के प्रबंधन के लिए 40 कम लागत वाले पीले चिपचिपे जाल लगाएं। सफेद मक्खी के वयस्कों को डायफेंथियूरॉन 50% WP @ 240 ग्राम/एकड़ (खेत या तो सिंचित होना चाहिए या वर्षा प्राप्त हुआ होना चाहिए) या एफिडोपाइरोपेन 50 DC @ 400 मिली/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20SG @ 60 ग्राम/एकड़ या फ्लोनिकैमिड 50 WG @ 80 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मि.ली./एकड़ के छिड़काव द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। थ्रिप्स को नियंत्रित करने के लिए स्पिनेटोरम 11.7% एससी @ 170 मिली. प्रति एकड़ का छिड़काव करें।
यदि कालिखयुक्त फफूंद दिखाई दे, पत्तियां चिपचिपी हो जाएंगी या यदि सफेद मक्खी की निमफल आबादी अधिक है, तो पहले वयस्क के उभरने के 3-5 दिन बाद पायरीप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 400 मिलीलीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 240 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। उपचारात्मक उपाय के रूप में प्रोपीकोनाज़ोल 25EC @1 मिली/लीटर या मेनकोज़ेब 30%WDG @2.0 ग्राम/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50WP@2.5 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव दोबारा करें। जैसिड संक्रमण को डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या टॉल्फ़ेनपाइराड 15 ईसी @ 400 मिली या फेनपाइरोक्सिमेट 5% ईसी @ 300 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करके प्रबंधित करें। रोसेट फूल को नष्ट करें और यदि पीबीडब्ल्यू की घटना फूल के आधार पर ईटीएल को पार कर जाती है यानी प्रति एकड़ देखे गए 100 में से 10 या अधिक फूल संक्रमित हैं या 20 में से 2 गूलर पीबीडब्ल्यू से संक्रमित हैं, या लगातार 3 रातों तक प्रति रात 5-8 नर पतंगे/ ट्रैप दिखते हैं, तो प्रोफेनोफॉस 50EC @ 600 मिली./एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5SG @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5SC @ 200 मि.ली./एकड़ का छिड़काव करें। कीटनाशकों और फफूंदनाशकों के टैंक मिश्रण के छिड़काव से बचें। केवल अनुशंसित कीटनाशकों या फफूंदनाशकों का ही छिड़काव करें।

राजस्थान		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त					अगस्त				
		16	17	18	19	20	22	23	24	25	26
	अजमेर	11	1.4	0	0	0	3	5	13	15	22
	जोधपुर	27.2	1.5	2	0	0	2	0	2	4	5
	नागौर						1	1	4	7	7
	पाली	0	11	13	0	0	0	2	5	35	24
	श्री गंगानगर	0	15	6	0	0	0	1	1	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:
दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में फसल 42 से 70 दिन पुरानी, तथा वानस्पतिक, स्कायर और फूल बनने की अवस्था में है। नाइट्रोजन की पहली खुराक दी गयी तथा खरपतवार प्रबंधन के लिए अंतर-कृषि संचालन किया गया। खेत खरपतवार से मुक्त हैं. जैसिड की घटना ईटीएल के ऊपर देखी गई और कुछ क्षेत्रों में सफेद मक्खी का संक्रमण भी शुरू हुआ है। अब तक बीमारियों की कोई घटना सामने नहीं आई है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल स्कायर गठन, फूल बनने और गूलर विकास अवस्था में 74 से 109 दिनों के बीच है। बुआई के बाद सिंचाई कर दी गई है। हाथ से निराई/गुड़ाई और अंतर-कृषि संचालन प्रगति पर हैं। फसल में खरपतवार दिखने लग गए हैं। जैसिड की आबादी 0 से 5/3 पत्तियां, सफेद मक्खी की आबादी 2 से 18/3 पत्तियां और थ्रिप्स की आबादी 0 से 14/3 पत्तियां दर्ज की गईं।

सलाह:
दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डुनारपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर खेतों से बारिश का अतिरिक्त पानी निकाल दें। जल्दी बोई गई कपास में रसचूसक कीटों के प्रकोप पर नजर रखें। यदि ईटीएल के पास किसी भी चूसने वाले कीट के संक्रमण की सूचना मिलती है, तो नीम आधारित कीटनाशक या एनएसकेई 5% + नीम का तेल 5 मिलीलीटर / लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर / लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 0.05% सर्फेक्टेंट का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की घटनाओं की निगरानी के लिए 8-10/एकड़ पीले चिपचिपे जाल

लगाएं। चूसक कीटों का संक्रमण ईटीएल के ऊपर होने पर, फ्लोनिकैमिड 50%WG @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20%SG @60 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल @ 60 मि.ली./एकड़ या टॉल्फ़ेनपाइरोड 15%ईसी @ 400 मि.ली./एकड़ या फेनपाइरोक्सिमेट 5%ईसी@ 300 मि.ली./एकड़ का छिड़काव करें। पीबीडब्ल्यू के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल लगाएं और रोसेट फूलों की भी निगरानी करें। वैधता के अनुसार फेरोमोन ट्रैप के जाल बदलें। यदि गुलाबी सूँडी का प्रकोप दिखे, (बुवाई के 60-90 दिनो के बाद), तो प्रोफेनोफॉस 50% ईसी @ 30 मिली/10 लीटर (1500 मिली/हेक्टेयर) या इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 5 ग्राम/10 लीटर (250 ग्राम/हेक्टेयर) या इंडोक्साकार्ब 14.5% एससी @10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या क्लोरपाइरीफोस 20% ईसी @ 25 मिली/10 लीटर (1250 मिली/हेक्टेयर)। का छिड़काव करें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को अधिकतम उर्वरक उपयोग दक्षता के लिए पहली और दूसरी सिंचाई के बाद नाइट्रोजन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक देने की सलाह दी जाती है। है। मिट्टी के प्रकार और नमी की स्थिति के आधार पर कुल 27.5 किलोग्राम यूरिया तीन भागों में दें, पहला बेसल पर, दूसरा पहली सिंचाई पर और तीसरा स्कायर गठन/दूसरी सिंचाई के दौरान। जहां भी फसल 70 दिन से ऊपर की हो, वहां पोटेशियम नाइट्रेट 2% का पर्णीय अनुप्रयोग करें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। प्रारंभिक स्तर पर चूसने वाले कीटों और पीबीडब्ल्यू की घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए एनएसकेई 5% + नीम फॉर्मूलेशन @ 5 मिलीलीटर/लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर/लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 0.05% सर्फेक्टेंट का छिड़काव करें। चूसक कीटों का संक्रमण ईटीएल के ऊपर होने पर, फ्लोनिकैमिड 50%WG @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20%SG @ 60 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL @ 60 मि.ली./एकड़ या टॉल्फ़ेनपाइरोड 15%EC @ 400 मि.ली./एकड़ या फेनपाइरोक्सिमेट 5%EC @300 मि.ली./एकड़ का छिड़काव करें। थ्रिप्स संक्रमण के मामले में, स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 170 मिली/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। जब भी पीबीडब्ल्यू की आबादी ईटीएल को पार कर जाए, तो रासायनिक कीटनाशकों जैसे इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफोस 50% ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। पिछले वर्ष गुलाबी बॉलवर्म से प्रभावित पाए गए स्थानों की बारीकी से निगरानी करें, गुलाबी सूँडी गतिविधि की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन जाल स्थापित करें।

मध्य प्रदेश		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त					अगस्त				
		16	17	18	19	20	22	23	24	25	26
	खरगाँव										
	धार	0	0.5	0	0	0	65	68	33	52	46
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:
खंडवा में, बोई गई फसल वानस्पतिक/स्कायर /फूल/गूलर बनने की अवस्था में 49 से 98 दिन पुरानी है। खेत की स्थितियों की व्यवहार्यता के आधार पर स्पॉट निराई, फर्टिगेशन और पौधों की सुरक्षा के उपाय किए गए। *सायनोडोन डैक्टिलॉन, साइप्रस रोटंडस, कैमेलिना सेसिलिस, कैमेलिना बेंगालान्सिस, डिगेरिया अर्वेन्सिस, यूफोरबिया हिरटा, यूफोरबिया जेनिकुलटा* और *फिलैन्थस निरूरी* जैसे खरपतवार खेतों पर हावी हो गए हैं। कुछ खेतों में जैसिड और सफेद मक्खी की घटनाएँ देखी गई। कुछ क्षेत्रों में बैक्टीरियल ब्लाइट और सर्कोस्पोरा की घटनाये भी देखी गई।धार, बड़वानी और छिंदवाड़ा जिलों के कुछ क्षेत्रों में पौधो के अचानक सूखने के लक्षण देखे गए हैं।

सलाह:
खंडवा में किसानों को रासायनिक उर्वरक की तीसरी खुराक देने की सलाह दी जाती है। जिस क्षेत्र में फसल 35 दिन से अधिक पुरानी हो गई हो, उस क्षेत्र में बैल चालित कोलपा से निराई-गुड़ाई शुरू करें। नम मिट्टी की स्थिति में जहां हाथ से निराई करना संभव नहीं है, वहाँ घास वाले खरपतवारों के प्रबंधन के लिए क्विज़ालोफॉप इथाइल 5% ईसी @ 2 मिलीलीटर/लीटर पानी, चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के लिए या पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.5 मिलीलीटर/लीटर पानी जैसे शाकनाशी का प्रयोग करें। घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार, दोनों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% एमईसी @ 2-2.5 मिली /लीटर पानी का प्रयोग करें। गुलाबी बॉलवॉर्म की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल और सफेद मक्खी की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं। 80 दिनो से अधिक की उन फसलों में, जिनमें रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप ईटीएल पार कर चुका है, डायफेनथियूरॉन 50% डब्ल्यूपी @ 240 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या फ्लोनिकामिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ का छिड़काव करें।